श्री ज्वालामुखी

- श्री धूमावती देवी की कथा
- गोरख-डिब्बी का इतिहास
- दर्शनीय स्थलों का सचित्र विवरण

सचित्र कथा एवं महात्म्य

श्री ज्वालामुखी

सम्पादक
श्री पं० ज्वालाप्रसाद जी 'चतुर्वेदी'

धूमावती देवी की कथा

- गोरख-डिब्बी का इतिहास
- दर्शनीय स्थलों का सचित्र विवरण
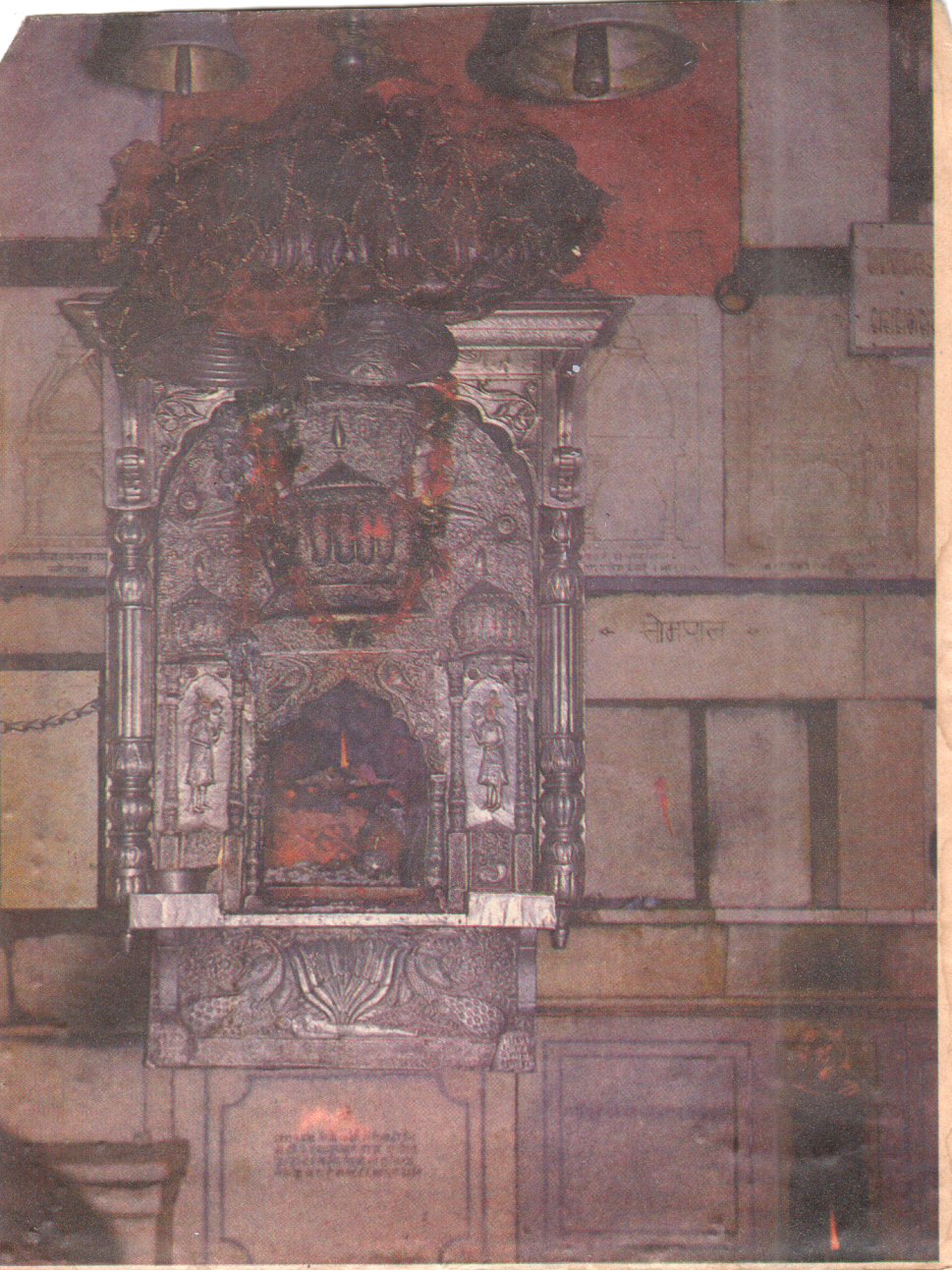
श्री धूमावती देवी

लगभग सभी विद्वानों ने एक मत होकर स्वीकार किया है कि 'पावन तीर्थ श्री ज्वा
गणना सिद्ध शक्तिपीठों में अनन्त काल से की जाती रही है तथा इस स्थान पर महाशक्ति
वती देवी का निवास है, परन्तु अभी तक प्रकाशित किसी भी पुस्तक में सम्भवतः इस विषय पर
प्रकाश डालने की चेष्टा नहीं हुई। अतः सर्वप्रथम, अपने आदरणीय पाठकों की जानकारी हेतु,
पराशक्ति धूमावती का आख्यान प्रारम्भ कर रहे हैं—

श्री धूमावती की गणना दश-महाविद्याओं में की जाती है। सबसे पहले प्रश्न यह उठता है कि 'दश-महाविद्या' क्या हैं? इनका अर्थ अथवा सन्दर्भ क्या है? अवश्य ही नये पाठकों के मन में, अथवा विषय से अनभिज्ञ लोगों के मन में, यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है। ऐसा स्वाभाविक ही है। अब दश महाविद्या का सम्पूर्ण विवरण देना तो इस पुस्तक का विषय नहीं, परन्तु संक्षेप में इतना कहा जा सकता है कि मूल-प्रकृति (भुवनेश्वरी) अपने दश-रूप धारण करके सृष्टि की उत्पत्ति, संचालन एवं संहार करती है इन दश रूपों अथवा महाशक्तियों को ही विभिन्न तांत्रिक-ग्रन्थों एवं पुराणों में 'महाविद्या' की संज्ञा दी गई है।

देवी-भागवत् के बारहवें अध्याय में इनका निवास चिन्तामणि गृह बताया गया है। मूल-प्रकृति भुवनेश्वरी दस-शक्तियों के साथ जिस मंच पर बैठती हैं ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा सदाशिव उसके चार पाए स्तम्भ हैं। उस मंच के ऊपर भुवनेश्वरी पराशक्ति दस महाविद्याओं के साथ विराजमान हैं—

"चिंतामणि गृहे राजंछक्ति तत्त्वात्मकैः परः।
सोपानैर्दशभिर्युक्तो मंत्रकोऽप्यधिराजते ॥ १२। १२। ११।

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।
एते मंचखुराः प्रोक्ताः फलकस्तु सदाशिवः॥ १२। १२। १२।

...व में यही दस महाविद्याएँ व्यष्टि में प्राणशक्ति का सम्पादन तथा ब्रह्माण्ड में सृजन, धारण, ...परिवर्तन, आकर्षण आदि क्रियाएँ सम्पादित करती हैं। अतः सृष्टि-रहस्य को भी प्रतीक रूप ...विद्या कहा जाता है। यही जीवधारियों के सारे शरीर के व्यापार को दस-कलाओं के रूप में ...ण किये रहती हैं।[1]

इन दश महाविद्याओं के नाम धर्मग्रन्थों में इस प्रकार मिलते हैं—१. काली २. तारा ३. षोड्षी ४. भुवनेश्वरी ५. छिन्नमस्ता ६. त्रिपुरभैरवी ७. धूमावती ८. बगलामुखी ९. मातंगी १०. श्री कमला।

इनका प्रादुर्भाव पुराणों में विभिन्न कथाओं के बीच कई-कई बार दर्शाया गया है। अन्त में, सारांश रूप से कहा जा सकता है कि विश्वजननी मूलप्रकृति ईश्वरी ही दस महाविद्याओं के रूप में परिणित हुई हैं। निर्गुण होते हुए भी सृष्टि की उत्पत्ति के समय वह अपनी इच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती है तथा भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए विविध रूप धारण करती हैं। यही दश महाविद्या की पौराणिक व्याख्या है।

धूमावती-शक्ति और सृष्टि का रहस्य

वैदिक-साहित्य के अनुसार—संहार की स्थिति अर्थात् अन्धकारमय-बिन्दुरूप स्थिति को काली कहते हैं। 'काली' शब्द काल अथवा समय से बना है। जब भुवनेश्वरी-शक्ति रचना अथवा संहार की

१. तन्त्र-शास्त्र के अनुसार मणिपुर-चक्र में अग्नि की दस कलाएँ उठा करती हैं, इनके नाम हैं— धूम्रार्चि, ऊष्मा, ज्वालिनी, विस्फुलिंगिनी, सुरूपा, सुश्री, कपिला, हव्यवहा और कव्यवहा।

इच्छा करती हैं तो चहुं ओर अन्धकार अथवा 'काली' स्थिति बनी होती है। चू
से पहले अथवा संहार के बाद एक सा ही होता है, या ऐसा कह लें कि कोई रूप
घोर तम की दशा। इसी स्थिति को "काली" की संज्ञा दी जाती है।

इसके पश्चात् शिव-रूप-अग्नि से धूम्र-सदृश प्रथम उद्गार हुआ। उसमें शक्ति की ज्व
उसी से जगत् उत्पन्न हुआ। कुछ विद्वान इसे दिव, नाक या त्रिदश कहते हैं—

धूमान्तरोष्म कलश शुद्धज्वालोपमाशक्तिः।
तां दिवमाहुरपरे केचन परमं व्योमापरे प्राहुः॥

अग्नि, सूर्य और सोम मण्डलों के निर्माण की यह प्रक्रिया त्रिपुरोपनिषद् के निम्न मन्त्र में बताई गई है—

ऊर्ध्वंज्वलज्ज्वलनं ज्योतिरग्रे तमो वै तिरश्चीनमजरं तद्रजोऽभवत्।
आनन्दनं मोदनं ज्योतिरिन्दोरेता उ वै मण्डला मण्डयन्ति॥

अर्थात् पहले ऊर्ध्वं ज्वालायुक्त प्रज्वलित ज्योति तमोगुण हुई। बिना जीर्ण हुए अर्थात् अनन्त वह जब तिरछी फैली वह रजोगुण हुआ। फिर आनन्द एवं मोद के देने वाली चन्द्रमा की ज्योति सत्वगुण हुआ। ये तीनों क्रमशः अग्नि, सूर्य और सोम के मण्डल बनाती हैं। इन तीन बिन्दुओं का समष्टिभूत महात्रिकोण ही दिव्याक्षर-स्वरूपा आद्याशक्ति का अपना रूप है। सभी देवी यन्त्रों में इसीलिए त्रिकोण प्रतीक रूप में रहता है।

प्रारम्भ में धूम्ररूप होने से देवी के इस स्वरूप को धूमावती तथा शक्ति अथवा ज्वाला-रूप में

...लामुखी कहा गया। इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि धूमावती तथा ज्वालामुखी ...नाम हैं।

... स्थिति में तम को विदीर्ण कर सूर्य का प्रादुर्भाव हुआ। यह हिरण्यगर्भ कहलाया। इसकी ... शक्ति को तारादेवी अथवा 'श्रीतारा' कहा जा सकता है। यह स्थिर है अतः सूर्य को अक्षोभ्य ... जाता है।

अक्षोभ्य-सूर्य चूंकि प्रचण्ड तथा उग्र रूप में था अतः इसकी शान्ति के बिना पृथ्वी, अन्तरिक्ष आदि ... निर्माण नहीं हो सकता था। सो उसमें सोम की आहुति हुई, जिससे वह शान्त हुआ। इस स्थिति का नाम दश महाविद्या-साहित्य में 'षोडषी' है। भूगर्भशास्त्री भी मानते हैं कि पृथ्वी सूर्य का छिटका हुआ एक पिण्ड है, जो निरन्तर वर्षा होने से ठंडा हुआ और फिर उस पर प्राणियों का प्रादुर्भाव हुआ।

जो ताप सूर्य में निहित होता है उसका कुछ भाग पृथक होकर वनस्पति इत्यादि पदार्थों के निर्माण में लग जाता है कुछ ऊर्जा जीवधारी भी प्राप्त करके खर्च कर देते हैं। सूर्य से लोकोपयोगी ऊर्जा का अलग होना 'छिन्नशीर्ष' कहलाता है। इस प्रक्रिया को महाविद्या के 'छिन्नमस्तिका' रूप से सम्बोधित करते हैं।

सृष्टि में परिवर्तन होता रहता है। इसका कारण आकर्षण-विकर्षण है। इस परिवर्तन अथवा क्षण-२ भावी क्रिया को 'भैरवी' कहते हैं। इन्हें त्रिपुरभैरवी भी कहा जाता है।

परिवर्तन में वैषम्य रहता है। द्वन्द्व चलता है। सुख-दुख का भाव रहता है। क्षुधा, तृषा, निद्रा आदि दुःख के रूप हैं। यह दुःखद परिवर्तन 'धूमावती' के नियन्त्रण में होता है। वे चाहें तो दुख का कारण ही उत्पन्न न होने दें।

सृष्टि में स्तम्भन की क्रिया बगलामुखी द्वारा होती है।

मोह, ममता आदि की प्रवृत्तियाँ सारे प्राणियों को एक दूसरे के साथ बाँ
'मातंगी' कहलाती है।

विज्ञान, प्रगति, रचनात्मकता, सुख-समृद्धि तथा आनन्द इत्यादि क्रियाएँ सम्पादित
शक्ति का नाम 'कमला' है।

इस प्रकार सृष्टि के उन्मुख होने से लेकर पुनः अपने निमित्त में लीन होने वाला यह शक्ति-
महाविद्या के नाम से जाना जाता है।

श्री धूमावती देवी की कथा

धूमावती के रूप में महाशक्ति के प्रादुर्भूत होने की भी एक कथा है। एक बार कैलाश पर्वत पर महादेव के साथ पार्वती बैठी हुई थी। उन्होंने शंकर जी से कहा—बड़ी भूख लगी है, कुछ खाने को दीजिए। कई बार माँगने पर भी कुछ नहीं मिला तो पार्वती महादेव को उठाकर निगल गईं। उनके शरीर से धूमराशि निकली तब शिव ने पार्वती से कहा कि आपकी सुन्दर मूर्ति बगला धुएँ से ढक जाने के कारण धूमावती या धूम्रा कही जाएगी। यह महाशक्ति अकेली है तथा स्वयं नियंत्रका है, इसका कोई स्वामी नहीं है, अतः इसे विधवा कहा गया। दुर्गासप्तशती में इन्होंने ही प्रतिज्ञा की थी—जो मुझे युद्ध में जीत लेगा तथा मेरा गर्व दूर कर देगा, वही मेरा पति होगा। ऐसा कभी नहीं हुआ, अतः वह कुमारी हैं, धन या पति रहित हैं।

योो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥(५/१२०)

...ादेव को निगल जाने के कारण विधवा हैं। नारद पंचरात्र का विवरण इस प्रकार है। ...शरीर से उग्र चण्डिका प्रकट की थी जो सैकड़ों गीदड़ियों की भाँति आवाज करने वाली थी, ...व को दूत बनाकर भेजा था। शिव को निगलने का तात्पर्य है उनके स्वामित्व का निषेध। ... कच्चे माँस से उनकी अंगभूता शिवाएँ तृप्त हुईं। यही उनकी भूख का रहस्य है। सप्तशती के ... अध्याय में इस घटना का उल्लेख है। धूमावती, बगला, तारा तथा काली को अघोर कर्म के लिए ...ोगी बताया गया है।

श्री धूमादेवी का ध्यान

विवर्णा चंचला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा, विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा।
काकध्वजरथारूढ़ा विलम्बितपयोधरा, शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षा धूमहस्ता वरान्विता।
प्रवृद्धघोषणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा, क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहप्रिया।

विवर्ना महाचंचलास्यां रूपा, बड़ी वस्त्र मैले लये हाथ सूपा।
छुटै केस रूखे फंटे दन्त कड्ढै, चढ़ी काकरथ दुज्जनो भीति बड्ढै।
गहे हाथ में भूत को दीठि रूखी, बड़े रूख से रोम या सीरु भूखी।

विवर्ण, चंचल, काले रंग वाली, मैले कपड़े वाली, खुले केश, रूखी, विधवा, काकध्वज रथ पर आरूढ़, हाथ में छाज लिए, भूख-प्यास से व्याकुल तथा निर्मम आँख धारण किए हुए हैं। पिप्पलाद मुनि ने इनकी उपासना की थी। विपत्ति नाश, रोग नाश, युद्ध जय, उच्चाटन तथा मारण में इस विद्या का प्रयोग होता है। शाक्तप्रमोद में कहा गया है—

महाऽदि महाघोरे महारोगे महारण, शत्रूच्चाटे मारणादौ जन्तूनाम्मोहने

इसके उपासक पर दुष्टाभिचार का प्रभाव नहीं हो सकता—

१. देहि भक्ष्यं जगन्नाथ न शक्नोमि विलम्बितुम्, इत्युक्त्वा पतिमादाय मुखे चिक्षेप त।
क्षणेन तस्या देहात्तु धूमसंघो व्यजायत, ततो देहे समुत्पन्ने शंभुस्तु निजमायय
उवाच परमेशानः स्वां प्रियां शृणु शोभने, पश्य भद्रे महाभागे पुरुषो नास्ति मां बिना।
त्वदन्या वनिता नास्ति पश्य त्वं ज्ञानचक्षुषा, साधव्यं लक्षणं देवि कुरु त्यागं पतिव्रते।
एषा मूर्त्तिस्तव परा विख्याता बगलामुखी, धूमव्याप्तशरीरात्तु ततो धूमावती स्मृता।
(प्रा० तो० पृष्ठ

स्वतन्त्र तन्त्र में कहा गया है कि दक्ष के यज्ञ में स्वयं को योगाग्नि से दग्ध करने पर धुआँ उत्प
हुआ, उससे यह विग्रह प्रकट हुआ।

दक्षप्रजापतेर्यज्ञे सर्वसंहारचंचला,
क्रुद्धा देहं विनिक्षिप्य ततो धूमोऽभवन्महान्।
तस्माद्धूमावती जाता सर्व शत्रुविनाशिनी॥
(प्रा० तो० पृष्ठ ७३४)

श्री धूमावती देवी की महिमा

धूमावती स्थितप्रज्ञता की प्रतीक हैं। इनका काक वाहन वासनाग्रस्त मन का प्रतीक है जो निरंतर अतृप्त रहता है। तमोमयी बुद्धि या अविवेक ही धूमतनु है। साधक या जीव की दीन-अवस्था (पशु-अवस्था), भूख, प्यास, कलह, दरिद्रता आदि इसकी क्रियाएँ हैं। साधारण जीव लगभग इन्हीं अवस्थाओं

द इनकी कृपा हो जाए तो प्राणी इन सभी अवस्थाओं को दूर कर सम्पन्नता
।

हा गया है कि धूमावती उग्रतारा ही है जो धूमा होने से धूमावती कही जाती है।

धूमव्याप्तशरीरात्तु ततो धूमावती स्मृता।
यथोग्रतारिणीमूर्तिः यथा काली पुरा सती।
छिन्नमस्ता यथा मूर्तिः तथा त्वं परमेश्वरी।

दुर्गा सप्तशती में वाभ्रवि और तामसी नाम से इन्हीं की चर्चा है।

मेधे सरस्वति वरे भूति वाभ्रवि तामसि। ११। २३।

यह देवि प्रसन्न होने पर रोगों को नष्ट कर देती है तथा कुपित होने पर समस्त सुखों तथा काम-
ाओं का नाश कर देती है। इनकी शरण में गए लोगों की विपत्ति नष्ट हो जाती है तथा सम्पन्नता
प्राप्त कर वह दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं।

रोगानशेषानपहंसितुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयातां प्रयान्ति। ११। २६।

ऋग्वेदोक्त रात्रिसूक्त में इन देवी को 'सुतरा' अर्थात् सुखपूर्वक तरने योग्य कहा गया है। तारा
या तारिणी को इनका पूर्वरूप इसीलिए आगमों में कहा गया। ऋण दूर कर अर्थात् अभाव और संकट
दूर कर धन और सुख देने वाली होने से इन्हें भूति कहा गया।

उष ऋणेव यातय। ऋक्। १०। १२७। ७।

अज्ञान को गीता में 'धूमेनाक्रियते वह्नि' उदाहरण देकर ज्ञान को आवरित करने वाला कहा गया
है। यहाँ आत्मा काम द्वारा आवृत रहता है। इसे यह देवी ज्योति रूप होकर छिन्न करती हैं अतः
मोक्षदा भी है।

श्री धूमावती देवी

१८ भुजा सहित माता का विराट् रूप

श्री ज्वालामुखी तीर्थ

यह धूमा-देवी का स्थान है। इसकी मान्यता ५१ शक्तिपीठों में सर्वोपरि है। कहा जाता है कि यहाँ पर भगवती सती की महाजिह्वा गिरी थी तथा भगवान शिव उन्मत्त भैरव रूप से स्थित हैं। इस तीर्थ में देवी के दर्शन 'ज्योति' के रूप में किए जाते हैं। पर्वत की चट्टान से ६ विभिन्न स्थानों पर यह ज्योति बिना किसी ईंधन के स्वतः प्रज्जवलित होती है। इसी कारण देवी को 'ज्वाला जी' के नाम से पुकारा जाता है और यह स्थान ज्वालामुखी नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मार्ग परिचय—यह स्थान हिमाचल-प्रदेश के जिला काँगड़ा में स्थित है। पंजाब राज्य में जिला होशियारपुर से गोपीपुरा डेरा नामक स्थान होते हुए बसें ज्वाला जी पहुँचती हैं। डेरा से लगभग २० किलोमीटर की दूरी पर ज्वाला जी का मन्दिर है। पठान कोट से कांगड़ा होते हुए भी यात्री ज्वालामुखी पहुँच सकते हैं कांगड़ा से ज्वालामुखी लगभग २ घण्टे का बस मार्ग है, हर आधे घण्टे बाद बसें चलती हैं।

श्री ज्वालामुखी की उत्पत्ति–पौराणिक कथा

श्री शिवमहापुराण की एक कथा अनुसार भगवती सती के पिता दक्ष-प्रजापति ने अपनी राजधानी में किसी समय एक महायज्ञ का आयोजन किया, जिसमें सभी देवताओं तथा ऋषि-मुनियों को आमंत्रित किया गया। परन्तु दक्ष ने शिवजी से कुछ वैमनस्य होने के कारण उन्हें उस यज्ञ में सम्मिलित होने के

लिए निमंत्रण न भेजा। उस समय भगवान् शिव की अर्द्धांगिनी सती अपने पिता दक्ष के न बुलाने पर और पति के विरोध करने पर भी पिता के घर चली गईं। यज्ञ में अपने पति का भाग न देखकर सती ने अपने पिता दक्ष-प्रजापति से कहा कि यह उचित नहीं है। प्रत्युत्तर में पुत्री को अपमानित होना पड़ा। इस प्रकार तिरस्कृत होने पर सती ने यज्ञ की अग्नि में कूदकर अपने प्राणों की आहुति दे दी। यज्ञाग्नि में भस्म होते ही सती की देह के आलोक-मात्र से भय देने वाली ज्वाला उत्पन्न हुई। सर्वप्रथम आकाश की ओर जाने के पश्चात वह ज्वाला (ज्योति-पुञ्ज) एक पर्वत पर गिरा। यही ज्योति-पुञ्ज ज्वालामुखी के नाम से पूजित हुआ, जिसे अन्य पुराणों में भी सर्वफलदायक कहा गया है।

सती के शरीर से ज्वाला निकल जाने के बाद यज्ञ की वेदी में योगाग्नि-दग्ध केवल स्थूल शरीर ही रह गया। इसके पश्चात् शिव के वीरभद्र आदि गणों ने उस यज्ञ का क्षण भर में विध्वंस कर दिया। परन्तु भगवान् शंकर का क्रोध शान्त न हुआ। चित्स्वरूपिणी भगवती सती के उस दग्ध शरीर को कन्धे पर उठाकर शिवजी "हा सती!" ऐसा बारम्बार कहते हुए व्यामोह-वश नाना देशों में भ्रमण करने लगे। ऐसी स्थिति देखकर, शिव का मोह दूर करने हेतु, भगवान् विष्णु सती के अंगों को धनुष पर बाण चढ़ाकर काटने लगे। इस प्रकार ५१ विभिन्न स्थानों पर सती के अंग-प्रत्यंग गिरे। इन्हीं ५१ स्थलों पर शिव ने भी अलग-२ रूप तथा नाम से निवास किया। इन स्थानों को ५१ शक्ति-पीठ माना जाता है, जिनमें ज्वालामुखी प्रमुख शक्ति-पीठ है। यहाँ पर भगवती सती की महाजिह्वा गिरी थी। इसकी पुष्टि 'तंत्र चूड़ामणि' नामक ग्रन्थ से भी होती है 'ज्वालामुख्य महाजिह्वा देव उन्मत्त भैरवः" अर्थात् ज्वालामुखी में सती की महाजिह्वा है और वहाँ पर श्री शंकर जी उन्मत्त भैरव रूप में स्थित हैं।

हवन-पूजा-आरती

ऐसी मान्यता है कि ज्वालामुखी में श्रद्धापूर्वक किए गए पूजन-हवन आदि दस हजार गुना अधिक फल प्रदान करते हैं। यद्यपि नवरात्रों के समय किए गए होम सर्वाधिक फल देने वाले माने जाते हैं, तथापि वर्ष के अन्य दिनों में श्रद्धा एवं विश्वास से किए गए सभी धार्मिक-कृत्य अवश्य ही मनोकामना पूर्ण करते हैं। इसके अतिरिक्त यथाशक्ति ब्राह्मण-भोजन तथा कन्या-पूजन भी किया जाता है। सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि हेतु ब्राह्मण-कुमारी, विजय की कामना के लिए क्षत्रिय-कन्या तथा धन-सम्पदा आदि लाभ प्राप्ति के लिए वैश्य-कन्या का पूजन करते हैं। धर्म-ग्रन्थों में लिखे अनुसार निर्दोष व आरोग्य ब्राह्मण कुमारी की पूजा मनुष्य के पहले किए गए सभी पापों को नष्ट कर देती है।

श्री ज्वाला देवी की पूजा तीन प्रकार से किए जाने का विधान है—

१. **पंचोपचार**—गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।

२. **दशोपचार**—पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, चन्दन।

३. **षोड्षोपचार**—आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्र, आभूषण, चंदन इतर, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, प्रणाम।

इसके अतिरिक्त श्री ज्वालामुखी मंदिर में प्रतिदिन पाँच बार आरती होती है—

१. **पहली आरती**—ब्रह्म-मुहूर्त में प्रातःकाल की जाती है। इसमें माल-पुआ, और मिश्री का भोग लगता है।

२. **दूसरी आरती**—पहली आरती के १ घंटा पश्चात् मंगल आरती होती है। जिसमें पीले चावल तथा दही का भोग लगाते हैं।

३. **तीसरी आरती**—मध्याह्न-काल में चावल, षट्रस दाल तथा मिष्ठान्न का भोग।

४. **चौथी आरती**—सायंकालीन आरती है। पूरी, चना तथा हलुवा का भोग।

५. **पाँचवीं आरती**—शयन-आरती, रात्रि के १० बजे दूध, मलाई व ऋतुफल का भोग लगता है।

चित्र-परिचय

(श्री ज्वालामुखी तीर्थ के दर्शनीय-स्थलों का विवरण)

1. जय माता दी—

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।"

—श्री दुर्गा सप्तशती

2. बस अड्डा, ज्वालामुखी—

बस-स्टैण्ड पर यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला बनी हुई है। समीप ही गीता भवन है, जहाँ यात्रियों के निवास के लिए कई कमरे तथा एक मन्दिर का निर्माण हुआ है। बस-स्टैण्ड से ज्वाला मुखी मन्दिर तक एक लम्बा बाजार है, जिसमें दैनिक-उपयोग की सभी वस्तुएं तथा भेटों की सामग्री व प्रसाद आदि मिल सकते हैं। बस स्टैण्ड के निकट लॉजिंग हाऊस व ज्वालामुखी होटल बने हैं जहाँ यात्रियों के लिये आधुनिक सुख-सुविधा से युक्त कमरे किराये पर मिल सकते हैं।

3. श्री ज्वालामुखी का विहंगम दृश्य—

श्री ज्वालामुखी मन्दिर में प्रवेश करने के लिए सिंह द्वार बना है। दूसरा मुख्य द्वार लंगर के अहाते के निकट है। मन्दिर के परकोटे में ही सेजा-भवन, वीर कुण्ड, लंगर-भवन तथा अकबर का छत्र भी सुरक्षित है। बाईं ओर लगभग १० सीढ़ियाँ चढ़कर गोरख डिब्बी है और ऊपर चढ़ने पर क्रमशः शिव-शक्ति, लाल शिवालय, सिद्ध नागार्जुन व अम्बिकेश्वर महादेव के दर्शन होते हैं।

4. श्री ज्वालामुखी मन्दिर—

के निर्माण के विषय में एक दन्त-कथा प्रचलित है, जिसके अनुसार सतयुग में सम्राट् भूमिचन्द्र ने ऐसा अनुमान किया कि भगवती सती की जिह्वा भगवान् विष्णु के धनुष से कटकर हिमालय के धौलीधार पर्वतों पर गिरी है। काफी प्रयत्न करने पर भी वह उस स्थान को ढूँढ़ने में असफल रहे। तदोपरान्त उन्होंने नगरकोट-काँगड़ा में एक छोटा सा मन्दिर भगवती के नाम से बनवाया। इसके कुछ वर्षों बाद किसी ग्वाले ने सम्राट् भूमिचन्द्र को सूचना दी कि उसने अमुक पर्वत पर ज्वाला निकलती हुई देखी है, जो ज्योति के समान निरन्तर जलती है। महाराज भूमिचन्द्र जी ने स्वयं आकर इस स्थान के दर्शन किए और उस घोर वन में मन्दिर का निर्माण किया। मन्दिर में पूजा के लिए शाक-द्वीप से भोजक जाति के दो पवित्र ब्राह्मणों को लाकर यहाँ का पूजन-अधिकार सौंपा गया। इनके नाम पं० श्रीधर तथा पं० कमलापति थे। उन्हीं भोजक-ब्राह्मणों के वंशज आज तक श्री ज्वाला देवी की पूजा करते आ रहे हैं।

महाभारत के एक प्रसंग के अनुसार पंच पाण्डवों (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल व सहदेव) ने ज्वाला-मुखी की यात्रा की तथा मंदिर का जीर्णोद्धार कराया ।इसी आधार पर निम्न भेंट गायी जाती है—

"पंजा-२ पांडवाँ तेरा भवन बनाया
अर्जुन ने चंवर डुलाया......"

5. हवन कुण्ड सहित पवित्र ज्योति दर्शन–

१. चाँदी के जाला में सुशोभित मुख्य ज्योति का पवित्र नाम 'महाकाली' है, जो मुक्ति-भुक्ति देने वाली है। २. इसके कुछ नीचे ही भण्डार भरने वाली महामाया 'अन्नपूर्णा' की ज्योति है। ३. दूसरी ओर शत्रुओं का विनाश करने वाली 'चण्डी' माता की जोत है। ४. समस्त व्याधियों का नाश करने वाली यह ज्योति 'हिंगलाज' भवानी की है। ५. पंचम ज्योति 'विन्ध्यवासिनी' है, जो शोक से छुटकारा देती है। ६. धन-धान्य देने वाली 'महालक्ष्मी' की यह ज्योति कुण्ड में विराजमान है। ७. विद्यादात्री 'सरस्वती' भी कुण्ड में सुशोभित है। ८. सन्तान सुख देने वाली 'अम्बिका' भी कुण्ड में दर्शन दे रही है। ९. इसी कुण्ड में विराजमान परम-पवित्र 'अन्जना' आयु व सुख प्रदान करती है।

6. मुख्य ज्योति दर्शन–

श्री ज्वालामुखी मन्दिर में देवी के दर्शन नौ ज्योति के होते हैं। यह ज्योतियें कभी कम या अधिक भी रहती हैं। भाव इस प्रकार माना जाता है—नवदुर्गा ही चौदह-भुवनों की रचना करने वाली हैं जिनके सेवक-सत्व, रज और तम, यह तीन गुण हैं। मंदिर के द्वार के सामने चाँदी के आले में

जो मुख्य ज्योति सुशोभित है, उसको महाकाली का रूप कहा जाता है। यह पूर्ण-ब्रह्म-ज्योति है तथा मुक्ति व भुक्ति देने वाली है। शेष ज्योतियों के पवित्र नाम व दर्शन इस प्रकार हैं -

7. अकबर का छत्र–

मुगल बादशाह अकबर द्वारा प्रायश्चित स्वरूप माता के दरबार में चढ़ाया गया सवा मन भारी शुद्ध सोने का छत्र, जो खण्डित अवस्था में रखा हुआ आज भी उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है, जिसे ध्यानू भक्त की कथा कहा जाता है।

(ध्यानू भक्त की कथा इसी एलबम के अन्तिम पृष्ठों में पढ़ें)

8. सेजा भवन–

यह भगवती ज्वाला देवी का शयन-स्थान है। भवन में प्रवेश करते ही बीचों बीच संगमरमर का चबूतरा बना हुआ है, जिसके ऊपर चाँदनी लगी हुई है। रात्रि १० बजे शयन-आरती के उपरान्त भगवती के शयन के लिए कपड़े एवं पूर्ण श्रृंगार के सामान के साथ पानी का लोटा और दातुन आदि रखी जाती है। सेजा भवन में चारों ओर दस महाविद्याओं तथा महाकाली, महालक्ष्मी व महासरस्वती की मूर्तियां बनी हैं। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी द्वारा रखवाई गई श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की हस्त लिखित प्रतिलिपि भी सेजा-भवन में सुरक्षित है।

9. गोरख-डिब्बी–

यहाँ पर एक छोटे से कुण्ड में जल निरन्तर खौलता रहता है और देखने में गर्म प्रतीत होता

जय माता की । Jai Mata Ki
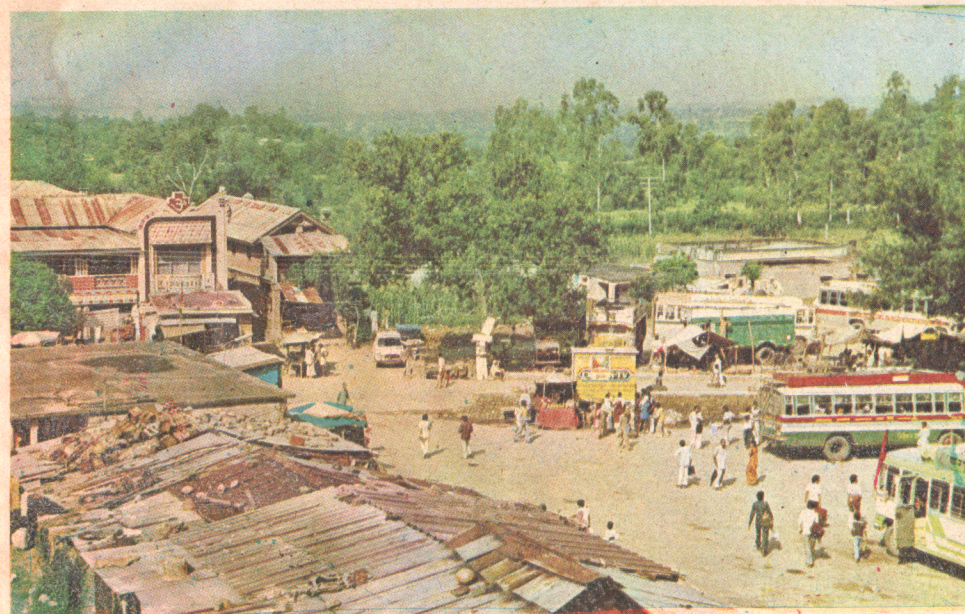
Bus-Stand, Jwalamukhi 2 बस स्टैण्ड, ज्वालामुखी
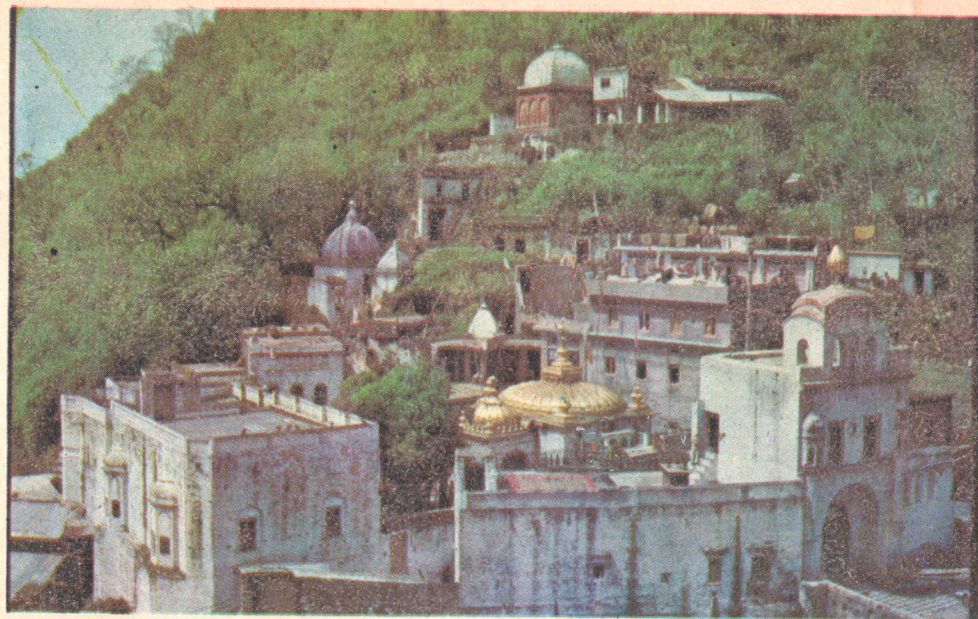
A bird's eye-view of Jwalaji **3** ज्वालामुखी का विहंगम दृश्य
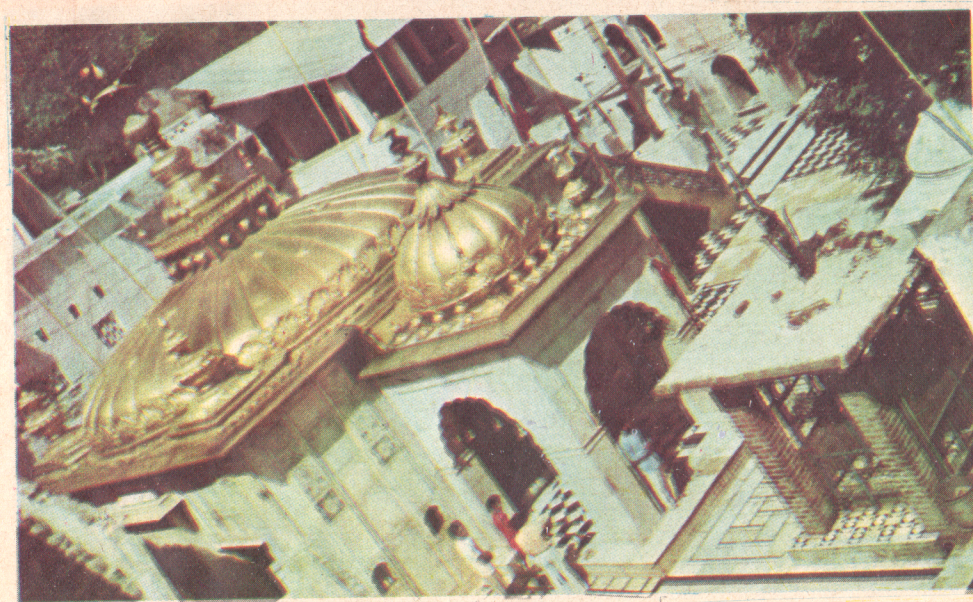
Jwalamukhi Temple **4** श्री ज्वालामुखी मन्दिर
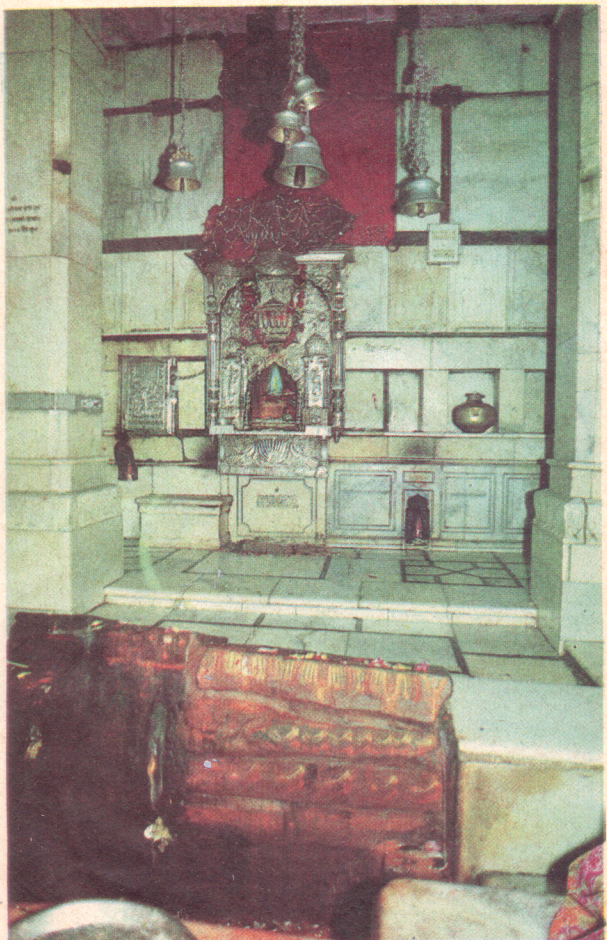
Havan Kund & Jyoti **5** हवन कुण्ड सहित ज्योति
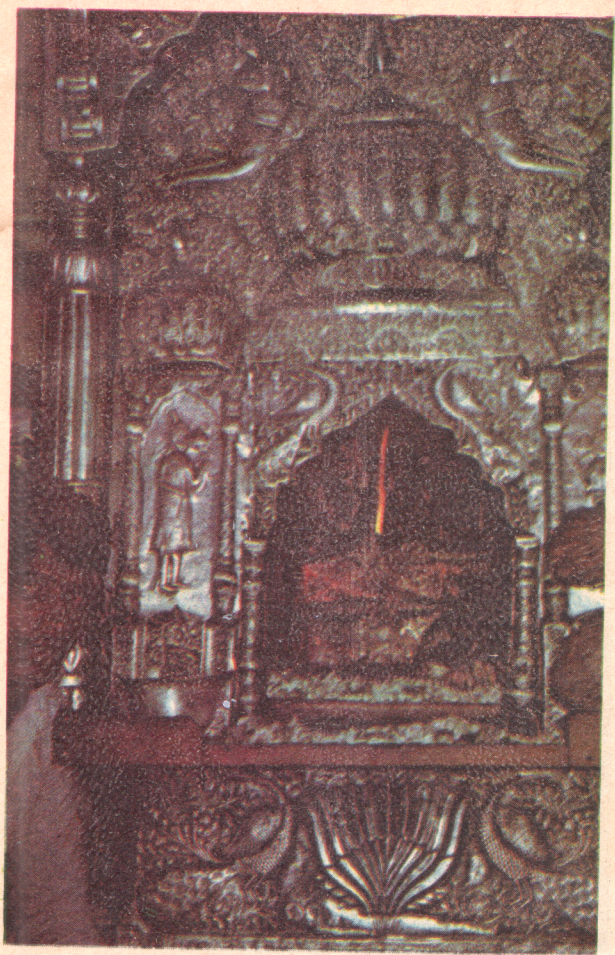
Main Flame-Mahakali 6 मुख्य ज्योति-महाकाली

Akbar's Chhatra **7** अकबर का छत्र
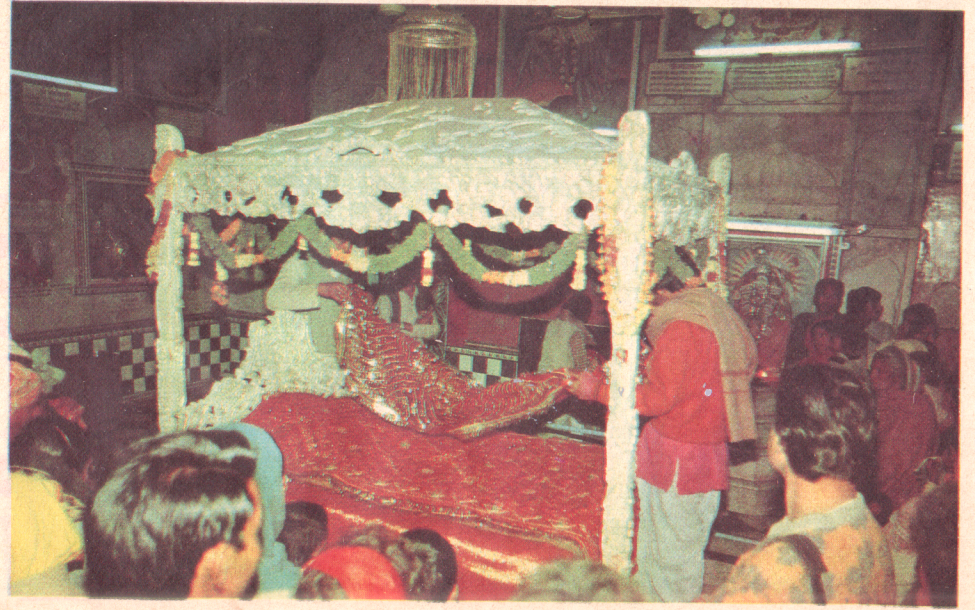
Seja-Bhawan

8

सेजा-भवन
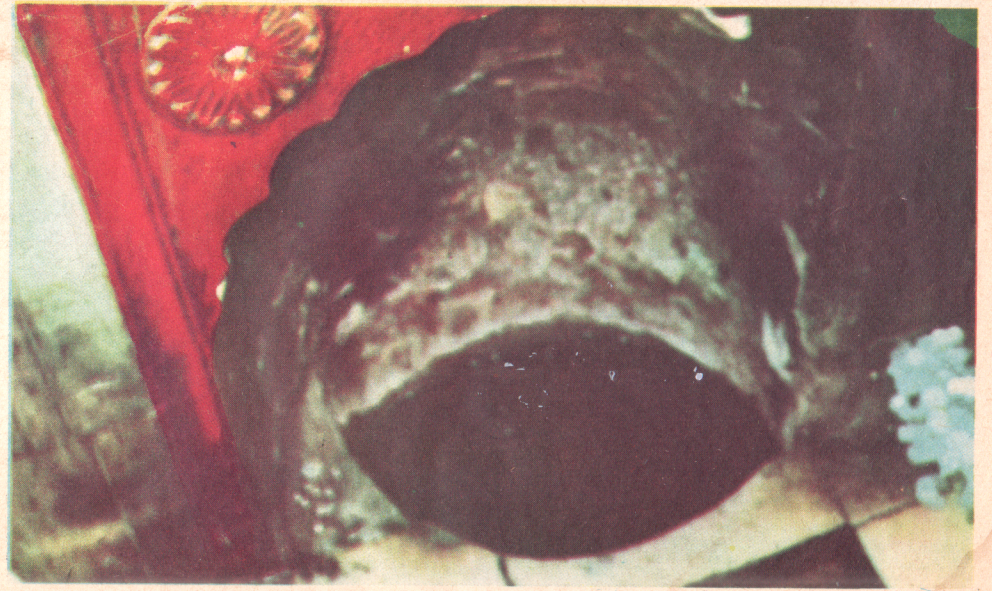
Gorakh-Dibbi

गोरख-डिब्बी

New-idol near G. Dibbi **10** ज्वालामाता की पिण्डी व मूर्ति
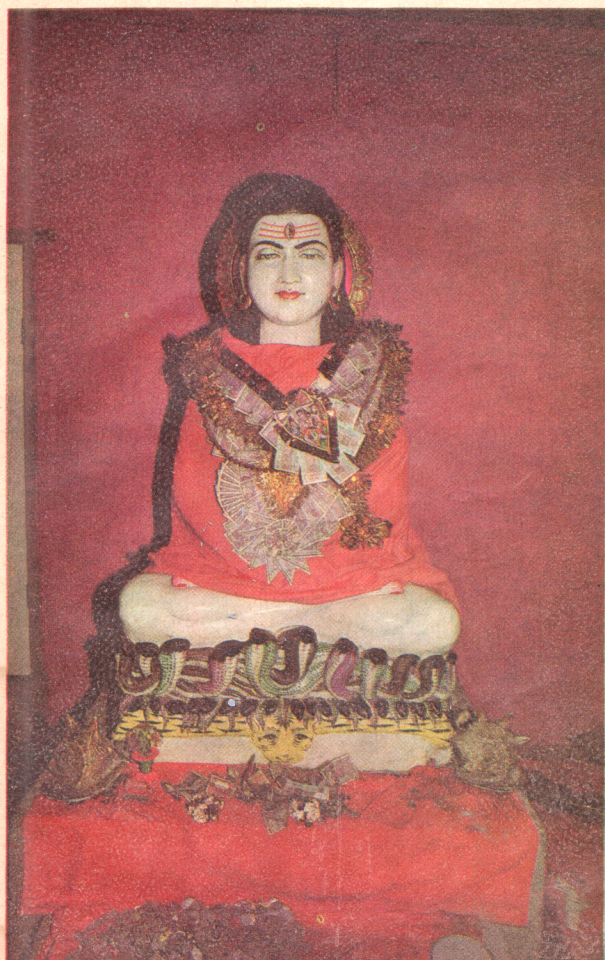
Guru Gorakhnathji ॥ प्रतिमा श्री गुरु गोरखनाथ जी

Radha-Krishna Temple **12** श्री राधा-कृष्ण मन्दिर

Lal-Shivala 13 लाल-शिवालय
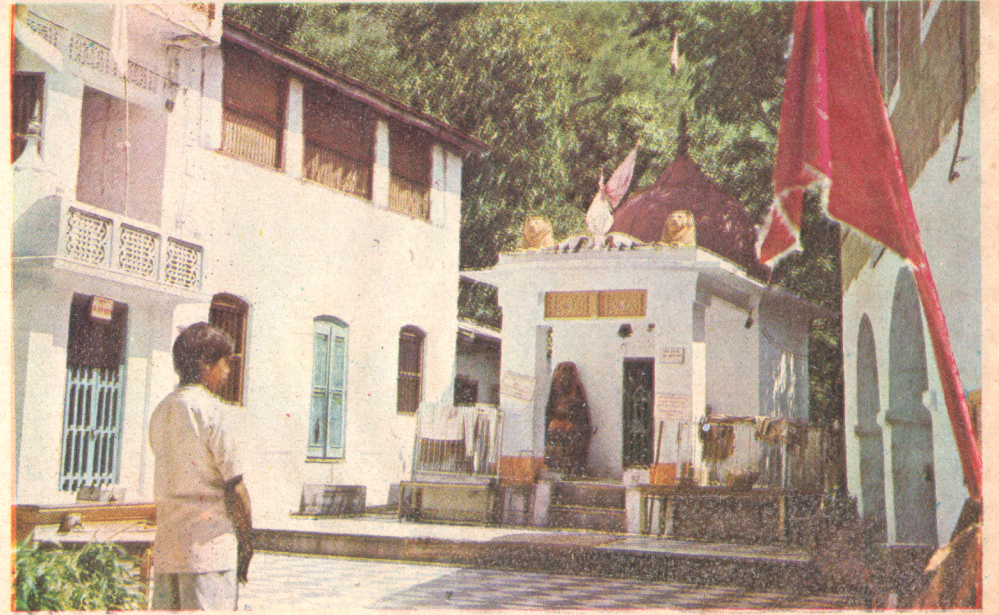
Ambikeshwara Mahadeva **15** अम्बिकेश्वर महादेव
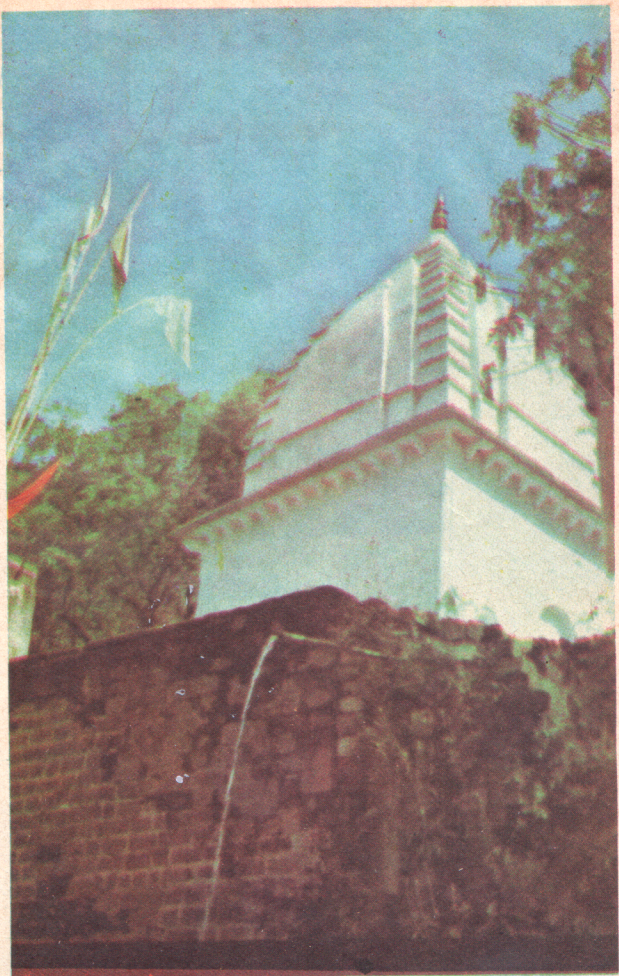
Teada-Mandir 16 टेढ़ा-मन्दिर

है, परन्तु वास्तव में जल ठण्डा है। जल हाथ से छूकर देखने पर बिल्कुल ठण्डा है। इसी स्थान पर छोटे कुण्ड के ऊपर धूप की जलती बत्ती दिखाने से जल के ऊपर बड़ी ज्योति प्रकट होती है। इसे रुद्र-कुण्ड भी कहा जाता है। यह दर्शनीय स्थान ज्वालामुखी मन्दिर की परिक्रमा में लगभग दस सीढ़ियाँ ऊपर चढ़कर दाईं ओर को है। कहा जाता है कि यहाँ पर गुरु गोरखनाथ जी ने तपस्या की थी। वह अपने शिष्य सिद्ध नागार्जुन के पास डिब्बी धरकर खिचड़ी माँगने गए, परन्तु खिचड़ी लेकर वापिस नहीं लौटे और डिब्बी का जल गर्म नहीं हुआ।

10. गोरख-डिब्बी के समीप ज्वालामाता की पिण्डी व मूर्ति—

गोरख-डिब्बी नामक स्थान के पास ही माता की ज्योति व पिण्डी के दर्शन होते हैं। २७ जनवरी सन् १९८४ को माता की पिण्डी प्रकट हुई। तथा ८ मार्च को पूजा व स्थापना की गई। भव्यमूर्ति का निर्माण श्री गोरखनाथ सम्प्रदाय के भेष बारह पंथ गोरख-डिब्बी ट्रस्ट सभा द्वारा करवाया गया है।

11. श्री गुरु गोरखनाथ जी की भव्य प्रतिमा—

ज्वाला माता की मूर्ति व पिण्डी के बिल्कुल सामने, उसी हॉल में लगभग २० हाथ की दूरी पर श्री गुरु गोरखनाथ जी की सुन्दर प्रतिमा स्थापित की गई है, जिसकी शोभा व गुरु जी के मुखमण्डल पर छाया तेज, कलाकार की निपुणता का परिचायक है।

12. श्री राधाकृष्ण मन्दिर–

गोरख-डिब्बी के समीप ही राधाकृष्ण जी का एक छोटा सा मन्दिर है। विश्वास किया जाता है कि यह अति प्राचीन मन्दिर कटोच राजाओं के समय बनवाया गया था।

13. लाल शिवालय–

गोरख-डिब्बी से कुछ ऊपर चढ़ने पर शिव-शक्ति और लाल-शिवालय के दर्शन होते हैं। शिव शक्ति में शिवलिंग के साथ ज्योति के दर्शन होते हैं। लाल शिवालय भी सुन्दर दर्शनीय मन्दिर है।

14. सिद्धि नागार्जुन–

यह रमणीक स्थान लाल शिवालय से ऊपर लगभग एक फर्लांग सीढ़ियाँ चढ़कर आता है। यहाँ पर डेढ़ हाथ ऊँची काले पत्थर की मूर्ति है। इसी को सिद्ध-नागार्जुन कहते हैं। इसके विषय में ऐसी कहावत प्रसिद्ध है कि जब गुरु गोरखनाथ जी खिचड़ी लेने चले गए और बहुत देर हो जाने पर भी वापिस न लौटे, तब उनके शिष्य सिद्ध-नागार्जुन पहाड़ी पर चढ़कर उन्हें देखने लगे कि गुरु जी कहाँ निकल गए। वहाँ से इन्हें गुरु जी तो दिखाई न दिए, परन्तु यह स्थान इतना मनोहर लगा कि नागार्जुन वहीं समाधि लगाकर बैठ गए।

15. अम्बिकेश्वर महादेव

सिद्ध-नागार्जुन से लगभग एक फर्लांग पूर्व की ओर यह मन्दिर है। इस स्थान को उन्मत्त-भैरव भी कहते हैं। श्री शिव महापुराण की पीछे लिखी कथा के अनुसार जहाँ-जहाँ भी सती के अंग-प्रत्यंग गिरे, वहीं-वहीं पर शिवजी ने किसी न किसी रूप में निवास किया। यथा—ज्वालामुखी में शिवजी उन्मत्त-भैरव रूप से स्थित हुए। मंदिर अम्बिकेश्वर-महादेव के नाम से प्रसिद्ध है। स्थान रमणीक है।

16. टेढ़ा मन्दिर–

अम्बिकेश्वर से लगभग एक फर्लांग की चढ़ाई चढ़ने के बाद इस प्राचीन मन्दिर में श्री सीताराम जी के दर्शन होते हैं। कहा जाता है कि भूचाल आने से यह मन्दिर बिल्कुल टेढ़ा (तिरछा) हो गया था, फिर भी देवी के प्रताप से गिरा नहीं। देखने में अब भी यह मन्दिर टेढ़ा अर्थात् एक ओर को झुका हुआ है। इसीलिए यह टेढ़ा-मन्दिर नाम से जन साधारण में अधिक प्रसिद्ध है।

———

ध्यानू भक्त की कथा

जिन दिनों भारत में मुगल सम्राट अकबर का शासन था, उन्हीं दिनों की यह घटना है। नदोन ग्राम निवासी माता का एक सेवक (ध्यानू भक्त) एक हजार यात्रियों सहित माता के दर्शन के लिए जा रहा था। इतना बड़ा दल देखकर बादशाह के सिपाहियों ने चाँदनी चौक दिल्ली में उन्हें रोक लिया और अकबर के दरबार में ले जाकर ध्यानू भक्त को पेश किया।

बादशाह ने पूछा—तुम इतने आदमियों को साथ लेकर कहाँ जा रहे हो ?

ध्यानू ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया—मैं ज्वाला माई के दर्शन के लिए जा रहा हूं। मेरे साथ जो लोग हैं, वह माता के भक्त हैं और यात्रा पर जा रहे हैं।

अकबर ने यह सुनकर कहा—यह ज्वाला माई कौन है ? और वहाँ जाने से क्या होगा।

ध्यानू भक्त ने उत्तर दिया—महाराज ज्वाला माई संसार की रचना एवं पालन करने वाली माता हैं। वे भक्तों के सच्चे हृदय से की गई प्रार्थनाएं स्वीकार करती हैं तथा उनकी सब मनोकामनायें पूर्ण करती हैं। उनका प्रताप ऐसा है कि उनके स्थान पर बिना तेल बत्ती के ज्योति जलती रहती है। हम लोग प्रतिवर्ष उनके दर्शन को जाते हैं।

अकबर बादशाह बोले—तुम्हारी ज्वाला माई इतनी ताकतवर है, इसका यकीन हमें किस तरह आए ? आखिर तुम माता के भक्त हो, अगर कोई करिश्मा हमें दिखाओ तो हम भी मान लेंगे।

ध्यानू ने नम्रता से उत्तर दिया—श्रीमान ! मैं तो माता का एक तुच्छ सेवक हूं, मैं भला कोई चमत्कार कैसे दिखा सकता हूं ?

अकबर ने कहा—अगर तुम्हारी बन्दगी पाक व सच्ची है तो देवी माता जरूर तुम्हारी इज्जत रखेगी। अगर वह तुम जैसे भक्तों का ख्याल न रखे तो फिर तुम्हारी इबादत का क्या फायदा ? या तो वह देवी ही यकीन के काबिल नहीं, या तुम्हारी इबादत (भक्ति) ही झूठी है। इम्तिहान के लिए हम तुम्हारे घोड़े की गर्दन अलग किए देते हैं, तुम अपनी देवी से कहकर उसे दुबारा जिन्दा करवा लेना।

इस प्रकार घोड़े की गर्दन काट दी गई।

ध्यानू भक्त ने कोई उपाय न देखकर बादशाह से एक माह की अवधि तक घोड़े का सिर व धड़ को सुरक्षित रखने की प्रार्थना की। अकबर ने ध्यानू भक्त की यह बात मान ली। यात्रा करने की अनुमति भी मिल गई।

बादशाह से विदा होकर ध्यानू भक्त अपने साथियों सहित माता के दरबार में जा उपस्थित हुआ। स्नान-पूजन आदि करने के उपरान्त रात भर जागरण किया। प्रातःकाल आरती के समय हाथ जोड़कर ध्यानू ने प्रार्थना की—हे मातेश्वरी ! आप अन्तर्यामी हैं, बादशाह मेरी भक्ति की परीक्षा ले रहा है, मेरी लाज रखना, मेरे घोड़े को अपनी कृपा व शक्ति से जीवित कर देना, चमत्कार प्रकट करना, अपने सेवक को कृतार्थ करना। यदि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार न करेंगी तो मैं भी अपना सिर काटकर आपके चरणों में अर्पित कर दूंगा, क्योंकि लज्जित होकर जीने से मर जाना अधिक अच्छा है। यह मेरी प्रतिज्ञा है। आप उत्तर दें।

कुछ समय तक मौन रहा।

कोई उत्तर न मिला।

इसके पश्चात भक्त ने तलवार से अपना शीश काटकर देवी को भेंट कर दिया।

उसी समय साक्षात ज्वालामाई प्रकट हुई और ध्यानू-भक्त का सिर धड़ से जुड़ गया, भक्त जीवित हो गया। माता ने भक्त से कहा कि दिल्ली में घोड़े का सिर भी धड़ से जुड़ गया है। चिन्ता छोड़ कर दिल्ली पहुँचो। लज्जित होने का कारण निवारण हो गया। और जो कुछ इच्छा हो वर माँगो ?

ध्यानू भक्त ने माता के चरणों में शीश झुका कर प्रणाम कर निवेदन किया—हे जगदम्बे ? आप सर्व शक्तिमान हैं, हम मनुष्य अज्ञानी हैं, भक्ति की विधि भी नहीं जानते। फिर भी विनती करता हूं कि जगद्माता ! आप अपने भक्तों की इतनी कठिन परीक्षा न लिया करें। प्रत्येक संसारी भक्त आपको शीश भेंट नहीं दे सकता। कृपा करके हे मातेश्वरी ! किसी साधारण भेंट से ही अपने भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण किया करो।

"तथास्तु ! अब से मैं शीश के स्थान पर केवल नारियल की भेंट व सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना द्वारा ही मनोकामना पूर्ण करूँगी। यह कहकर माता अन्तर्धान हो गई।

इधर तो यह घटना घटी, उधर दिल्ली में जब मृत घोड़े के सिर व धड़, माता की कृपा से अपने आप जुड़ गये तो सब दरबारियों सहित बादशाह अकबर आश्चर्य में डूब गये। बादशाह ने कुछ सिपाहियों को ज्वाला जी भेजा। सिपाहियों ने वापिस आकर अकबर को सूचना दी—वहाँ जमीन में से आग की लपटें निकल रही हैं, शायद उन्हीं की ताकत से यह करिश्मा हुआ है। अगर आप हुक्म दें तो इन्हें बन्द

करवा दें। इस तरह हिन्दुओं की इबादत की जगह खत्म हो जाएगी। ऐसी मान्यता है कि अकबर ने स्वीकृति दे दी। शाही सिपाहियों ने सर्वं प्रथम माता की पवित्र ज्योति के ऊपर लोहे के मोटे-२ तवे रखवा दिये। परन्तु दिव्य ज्योति तवे फोड़ कर ऊपर निकल आई। इसके पश्चात एक नहर का बहाव उस ओर मोड़ दिया गया, जिससे नहर का पानी निरन्तर ज्योति के ऊपर गिरता रहे। फिर भी ज्योति का जलना बन्द नहीं हुआ। शाही सिपाहियों ने अकबर को सूचना दे दी। ज्योतों का जलना बन्द नहीं हो सकता, हमारी सारी कोशिशें नाकाम हो गईं। आप जो मुनासिब हो करें।

यह समाचार पाकर बादशाह अकबर ने दरबार के विद्वान ब्राह्मणों से परामर्श किया। ब्राह्मणों ने विचार करके कहा कि आप स्वयं जाकर देवी चमत्कार देखें तथा नियमानुसार भेंट आदि चढ़ा कर देवी माता को प्रसन्न करें। बादशाह के लिए दरबार जाने का नियम यह है कि स्वयं अपने कन्धे पर सवा मन शुद्ध सोने का छत्र लाद कर नंगे पैरों माता के दरबार में जाए। तत्पश्चात स्तुति आदि करके माता से क्षमा माँग लें।

अकबर ने ब्राह्मणों की बात मान ली। सवा मन पक्का सोने का भव्य छत्र तैयार हुआ। फिर छत्र अपने कन्धे पर रख कर नंगे पैरों बादशाह ज्वाला जी पहुँचे। वहाँ दिव्य ज्योति के दर्शन किए, मस्तक श्रद्धा से झुक गया, अपने पर पश्चाताप होने लगा। सोने का छत्र कन्धे से उतार कर रखने का उपक्रम किया…परन्तु…छत्र गिर कर टूट गया। कहा जाता है कि वह सोने का न रहा, विचित्र धातु का बन गया जो न लोहा था न पीतल, न ताँबा, न शीशा।

अर्थात देवी ने भेंट अस्वीकार कर दी।

इस चमत्कार को देखकर अकबर ने अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए माता से क्षमा की भीख माँगी और अनेक प्रकार से माता की पूजा आदि करके दिल्ली वापिस लौटा। आते ही अपने सिपाहियों को सभी भक्तों से प्रेम-पूर्वक व्यवहार करने का आदेश निकाल दिया।

अकबर बादशाह द्वारा चढ़ाया गया खण्डित छत्र माता के दरबार के बाईं ओर आज भी पड़ा हुआ देखा जा सकता है।

।। बोल साँचे दरबार की जय ।।

ध्यानू-भक्त द्वारा की गई

॥ ज्वाला जी की आरती ॥

जय काँगड़ा वाली धार दुर्ग तू बैकुण्ठ बनाया। टेक।

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी कोई तेरा पार न पाया। पान-सुपारी ध्वजा नारियल ले तेरी भेंट चढ़ाया ।।
साड़ी-चोली अङ्ग विराजे केसर तिलक लगाया। ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शङ्कर ध्यान लगाया ।।
नंगे-नंगे पैरों देवी अकबर आया सोने दा छत्र चढ़ाया। ऊँचे-२ पर्वत बन्यो शिवाली नीचे शहर बसाया ।।
धूप-दीप-नैवेद्य-आरती मोहन भोग लगाया। ध्यानू भक्त माता तेरे गुण गावे मनवाँछित फल पाया ।।

———

ध्यानु भक्त का शीश काटकर भेंट करना

सेना-भवन में माता का सम्पूर्ण-श्रृंगार (शयन)

माता ज्वालाजी का स्वरूप

ज्वालामुखी जगत की माता महामाया है। ये ज्योति स्वरूपा होकर इस तीर्थ पर विराजमान हैं। ज्वाला नामक पर्वत पर वास करने वाली पार्श्वस्थ तीनों पीठों की अधिष्ठात्री, नित्य, निर्दोष निस्सीम और अदृश्य हैं। कमल के आसन पर विराजमान चित्स्वरूपिणी और अभीष्ट देने वाली हैं।

ये देवी उदय होते हुए चन्द्रमा के समान मुख वाली, कमल का पुष्प धारण करने वाली, दक्षिण हाथ से अभय का वरदान देने वाली और त्रिवर्णात्मक शरीर वाली हैं। ज्वाला रूप अपनी सखियों से सुशोभित माता ज्वालामुखी करोड़ों सूर्यों के समान तेजस्विनी हैं। ये तीनों लोकों की जननी हैं।[1]

सारा संसार, सारी सम्पत्तियाँ इनका स्वरूप है। संसार में जितने भी प्रकार के अन्न, फल, फूल, वनस्पतियाँ आदि खाने योग्य पदार्थ हैं, जिनसे प्राणियों की रक्षा होती है, वे सब इनके ही रूप हैं। जिस धन से मानव मात्र का कार्य-व्यापार संचालित होता है उसकी ये अधिष्ठातृ देवी हैं। जो लोग माता ज्वालामुखी जी की भक्ति करते हैं उनके घर में सदैव लक्ष्मी का वास होता है।[2]

---

१. या सा ज्वालामुखी देवी त्रैलोक्य जननी स्मृता।

रुद्रयामलतन्त्र, ज्वालामुखी सहस्रनाम।

२. पारावार सुता नित्यं निश्चला तद्गृहेवसेत्।

—ज्वालामुखी स्तोत्र।

यही चामुण्डा हैं जिन्होंने चण्ड और मुण्ड नामक असुरों का संहार किया था। चिन्तपूर्णी, नयना देवी, महाकाली, भद्रकाली भी इनके ही नाम हैं। यही नवदुर्गा नाम से अनेक लीलाएँ करती हैं। महिषासुर, शुम्भ, निशुम्भ, रक्तबीज आदि का नाश भी इन्होंने ही किया था।[1] लोकरक्षा, लोककल्याण और देवोपकार के लिए ये अनेक नाम रूपों में अवतरित होती हैं।

अधर्मी दुष्टों का संहार करके अपने सेवकों के विघ्न, रोग, शोक, दु:ख, भय आदि को दूर करके उन्हें सुख संतोष और शान्ति प्रदान करती हैं। इनकी कृपा से मानव निर्भय हो जाता है। उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती। रोग आक्रमण नहीं करते।

जल, थल, आकाश तथा तीनों लोकों में समान रूप से विद्यमान माता ज्वालामुखी की जो उपासना करता है उसके शत्रओं का नाश होता है तथा सौभाग्य, आरोग्य और परम मोक्ष की प्राप्ति होती है।[2]

---

१. शुम्भ निशुम्भ हन्त्री च रक्तबीजस्य शोषिणी, काली कपाल हस्तेषु ज्वालामुखी नमोऽस्तु ते।

—ज्वालामुखी स्तोत्र।

२. जले ज्वाला स्थले ज्वाला ज्वाला आकाश मण्डले, त्रैलोक्यते व्याप्यते ज्वालामुखी नमोऽस्तु ते।

—रुद्रयामल तन्त्र।

गोरख डिब्बी और श्री गोरखनाथ

ज्वालामुखी तीर्थ का दूसरा महत्वपूर्ण पूजा स्थान गोरखडिब्बी है। यहाँ पर डिब्बी का अर्थ जल कुण्ड है। इस जलकुण्ड का सम्बन्ध नाथ संप्रदाय के प्रमुख आचार्य योगीराज गोरखनाथ जी के साथ होने से इस स्थान का नाम गोरख डिब्बी हुआ था। आजकल यद्यपि डिब्बी का अर्थ "जलकुण्ड" किया जाता है, परन्तु गोरखनाथ जी ने जिस डिब्बी में माता ज्वालामुखी जी को जल गर्म कर देने की प्रार्थना की थी, वह मिट्टी का पात्र था जिसमें वे खिचड़ी पकाना चाहते थे। डिब्बी का अर्थ मिट्टी का पात्र ही है, इसके प्रमाण में एक कथा इस प्रकार है—

सिद्ध कर्णरीया मेवाड़ देश के राजा थे। उनकी एक रानी का नाम पिंगला था। अपनी दूसरी रानियों की अपेक्षा राजा पिंगला के रूप-सौन्दर्य से अधिक प्रभावित थे तथा उसे अत्यन्त प्यार करते थे। दूसरी ओर रानी पिंगला भी राजा पर अत्यन्त आसक्त थी और जब राजा उसके साथ रहते तो उसकी प्रसन्नता की सीमा न रहती। वह आमतौर पर राजा से कहा करती थी कि वह उसके बिना जीवित नहीं रह सकती।

एक दिन अकस्मात् राजा के मन में रानी पिंगला के अपने प्रति प्यार की परीक्षा लेने का विचार उत्पन्न हुआ। उसने सोचा यह जो हर समय कहती रहती है कि—"आप ही मेरे प्राण हैं। मैं आपके बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकती" इसमें कुछ सच्चाई भी है या केवल 'त्रियाचरित्र' ही है।

ऐसा विचार होते ही उसने मन ही मन एक योजना बना ली और फिर एक दिन शिकार के बहाने अकेला ही जंगल में चला गया। एक दो दिन बाद उसने राज्य में यह समाचार प्रसारित करवा दिया कि राजा कर्णरीया शिकार खेलते समय एक चीते के आक्रमण से घायल होकर स्वर्गवासी हो गए।

इस समाचार से सारे नगर में हाहाकार मच गया। राजा कर्णरीया अपनी प्रजा से अत्यन्त प्यार करते थे, अतः सर्वत्र शोक का वातावरण छा गया। राजा की मृत्यु का समाचार सुनते ही रानी पिंगला ने अपनी जान दे दी। उसने अपने प्राण देकर यह प्रमाणित कर दिया कि राजा के प्रति उसका प्यार सच्चा और पवित्र था। जब राजा को रानी के देहान्त का समाचार मिला तो उसे अपने आचरण पर अत्यन्त खेद और पश्चाताप हुआ। जब रानी का शव श्मशान भूमि में लाया गया तो राजा वहाँ पहुंचा और रानी के शव के पास खड़ा होकर—"हा पिंगला" "हा पिंगला" कहकर विलाप करने लगा।

राजा की इस करुण दशा को देखकर अन्य उपस्थित परिजन भी जोर-जोर से रोने लगे। बड़ा कुहराम मचा। संयोग की बात कि उसी समय योगीराज गोरखनाथ उधर से गुजरे। राजा की अस्त-व्यस्त दशा देखकर वे वहाँ पर कुछ देर तक खड़े रहे और फिर सारी बात समझकर उन्होंने राजा को समझाने के आशय से कहा—

"तुम मरी, हुई अपनी रानी पिंगला के लिए विलाप करना बन्द करो। तुम्हारे रोने से यह जिंदा नहीं हो सकती।"

गोरखनाथ जी के इन शब्दों का राजा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह लगातार पिंगला को पुकारता हुआ बिलाप करता रहा। यह देखकर गोरख नाथ जी ने अपने हाथ में पकड़ा हुआ मिट्टी का भिक्षापात्र धरती पर गिरा दिया। पात्र के टूट जाने पर गोरखनाथ जी भी 'हा डिब्बी 'हा डिब्बी' कहकर

रोने लगे। राजा ने उनसे कहा कि एक मामूली मिट्टी के पात्र के लिए रोना-धोना उचित नहीं, वह उनको और पात्र दिलवा देगा। इस पर गोरखनाथ जी ने कहा कि उन्हें तो वही पात्र चाहिए, दूसरा नहीं। इस पर राजा ने गोरखनाथ जी को मूर्ख कहा तो उन्होंने भी राजा को मूर्ख बताते हुए कहा कि मनुष्य का शरीर भी मिट्टी के पात्र के तुल्य है, जो समय आने पर टूट सकता है। अतः मृत पिंगला रानी को प्राप्त करने के लिए उसका रोना-धोना भी मूर्खता है।

राजा कर्णरीया ने गोरखनाथ जी को पहचान लिया और उनका शिष्य बनने का आग्रह किया। योगीराज के परामर्श पर राजा ने सब कुछ त्यागकर उनका शिष्यत्व ग्रहण कर लिया।

गोरख डिब्बी के दर्शन

आधुनिक काल में डिब्बी का अर्थ जलकुण्ड ही माना जाता है। बदामदे से कुछ सीढ़ियाँ उतर कर इस जलकुण्ड पर पहुंचा जाता है। यहाँ पर एक शिलाखण्ड है जिसके एक कोने में से ज्वाला निकलती रहती है। इस शिलाखण्ड के नीचे जलकुण्ड है जिसके पास मशाल, धूप अथवा जलती हुई माचिस रखने से ज्वाला प्रकट हो जाती है और क्षण में ही लुप्त हो जाती है। इस ज्वाला को भी भगवती का रूप माना जाता है। कुण्ड का जल उबलता रहता है परन्तु गर्म नहीं होता।

गोरख डिब्बी के साथ विशाल भवन में गुरु गोरखनाथ जी की धूनी है जिसमें बहुत से छोटे-छोटे

त्रिशूल गड़े हैं। इसके पास ही चौकी पर गुरू गोरखनाथ का चित्र रखा हुआ है। इस चित्र के पास ही संगमरमर की चौकी पर योगी संप्रदाय के प्रवर्तक योगीराज मत्स्येन्द्रनाथ जी का बड़ा चित्र है। इस स्थान की स्थापना काल से ही शिलाखण्ड से एक ज्वाला निकलती रहती है। इस स्थान पर माता ज्वालामुखी, श्री मत्स्येन्द्रनाथ तथा श्री गोरखनाथ जी की प्रातः सायं पूजा की जाती है।

गोरखनाथ जी माता ज्वालामुखी जी के दरबार में

एक बार भ्रमण करते-करते योगीराज गोरखनाथ जी माता ज्वालामुखी के तीर्थ पर आए। उन दिनों अनेक लोग माता के निमित्त पशु बलि दिया करते थे। जब योगीराज माता के चरणों में उपस्थित हुए तो माता ने प्रकट होकर दर्शन दिए। कुशल समाचार पूछने के उपरान्त देवी ने उन्हें भोजन का निमन्त्रण दिया। इसके उत्तर में उन्होंने अत्यन्त नम्रता से निवेदन किया कि वे तो केवल माँ के दर्शनों की कामना से आये थे। माँ के दर्शन हो गए, उन्हें सब कुछ मिल गया। उनको भोजन की नहीं केवल दर्शन की भूख थी, जो मिट गई।

इस पर देवी ने कहा कि दर्शन की भूख दर्शन से और भोजन की भूख भोजन से ही दूर होती है। यदि कोई और बाधा हो तो उसे भी दूर करके अनुकूल व्यवस्था की जा सकती है। यह सुनकर गोरख जी ने कहा—

"सभी रहस्य जानने पर भी यदि आप आग्रह करती हैं तो वास्तव में आपके निमन्त्रण को अस्वीकार करने का हेतु यह है कि योगी के लिए आन्तरिक और बाहरी दोनों प्रकार की शुद्धि रखना आवश्यक है। ऐसी दशा में यदि आपके द्वारा किया गया भोजन हम ग्रहण कर लें जो माँस से विरहित नहीं है तो हमारी दोनों प्रकार की शुद्धि जाती रहे। मैं तो आपसे भी ऐसा भोजन स्वीकार न करने की प्रार्थना करता हूँ।'

देवी ने कहा—'मैं भी ऐसा भोजन नहीं चाहती। पर लोगों ने अपनी जीभ के स्वाद के कारण ऐसी प्रथा चला रखी है। यह समय का प्रभाव है। आप अपने विषय में आज्ञा दें कि किस प्रकार के भोजन का प्रबन्ध किया जाए।'

"मातेश्वरी ! आपका अतिथि सत्कार पूर्ण हुआ और हमने प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया। हमारी अभिलाषा खिचड़ी पकाकर खाने की है। इसमें जल आपका और अन्न हमारा होगा। आप डिब्बी में थोड़ा सा जल गर्म कर दें तब तक हम भिक्षा ले आयेंगे।"

माता ने कहा—

"जैसी आपकी इच्छा। पर जितना समय आपको भिक्षा लाने में लगेगा उतने समय में डिब्बी तो क्या, पूरे पर्वत को ही गर्म किया जा सकता है।"

"जल गर्म होते ही हम उपस्थित हो जाएंगे।"

ऐसा कहकर गोरख जी ने देवी से विदा ली और फिर तीर्थ से प्रस्थान कर भिन्न-भिन्न प्रांतों में भ्रमण करने लगे।

दूसरी ओर देवी ने डिब्बी में रखे जल को गर्म करने की अपेक्षा एक छोटे से जल कुण्ड को ही गर्म करने के आशय से उनके इर्द-गिर्द ज्वालाएँ प्रकट कीं। कुण्ड का जल शीघ्र ही उबलने लगा, पर गर्म न हुआ। जल गर्म न हुआ तो गोरख भी नहीं आये। आज भी यही स्थिति है। इसी कारण यह जलकुण्ड गोरखडिब्बी के नाम से विश्रुत हुआ। तब से इस स्थान पर माता ज्वालामुखी के साथ-साथ श्री गोरखनाथ तथा मत्स्येन्द्रनाथजी की प्रातःसायं पूजा की जाती है। मत्स्येन्द्रनाथ गोरखनाथ के गुरु रूप में प्रसिद्ध हैं। प्राचीन ग्रन्थों में प्रायः दोनों महापुरुषों के नाम साथ-साथ स्मरण किये गये हैं।

आरती—श्री गुरु गोरखनाथ जी

जय गोरक्ष योगी (श्रीगुरू जी) हर हर गोरक्ष योगी।
वेद पुराण बखानत, ब्रह्मादिक सुरमानत, अटल भवन भोगी।
ॐ जय गोरक्ष योगी ।।१।।

बाल जती ब्रह्मज्ञानी योग युक्ति पूरे (श्री गुरू जी) योग युक्ति पूरे।
सोहं शब्द निरन्तर (अनहद नाद निरन्तर) बाज रहे तूरे।
ॐ जय गोरक्ष योगी ।।२।।

रत्नजड़ित मणिमाणिक कुण्डल कानन में (श्री गुरूजी) कुण्डल कानन में
जटा मुकुट सिर सोहत भस्मन्ती तन में। ॐ जय गोरक्ष योगी ।।३।।

आदि पुरुष अविनाशी निर्गुण गुणराशी (श्री गुरूजी) निर्गुण गुणराशी
सुमिरण से अघ छूटे, सुमिरन से पाप छूटे, टूटे यम फाँसी।
ॐ जय गोरक्ष योगी ।।४।।

नन्दनन्दन जगवन्दन गिरधर वनमाली (श्री गुरूजी) गिरधर बनमाली
निश वासर गुणगावत, वंशी मधुर वजावत, संग रुक्मणि बाली।
ॐ जय गोरक्ष योगी ।।५।।

धारा नगर मैनावन्ती तुम्हरो ध्यान धरे (श्री गुरूजी) तुम्हरो ध्यान धरे
अमर किये गोपीचन्द, अमर किये पूर्णमल, संकट दूर करे।
ॐ जय गोरक्ष योगी ।।६।।

चन्द्रावल लखरावल निजकर घात मरी (श्री गुरूजी) निजकर घात मरी
योग अमर फल देकर २ क्षण में अमर करी।
ॐ जय गोरक्ष योगी ।।७।।

वीरधीर संग ऋद्धिसिद्धि गणपति चंवर करे (श्री गुरूजी) गणपति चंवर
करे, जगदम्बा जगजननी २ योगनी ध्यान धरे।
ॐ जय गोरक्ष योगी ।।८।।

इतनी श्री नाथ जी की मंगला आरती निशदिन जो गावे (श्री गुरूजी)
प्रात समय गावे। भणत विचार परम पद (भृर्तहरि भूप अमर पद)
सो निश्चय पावे। ॐ जय गोरक्ष योगी ।।९।।

आरती—श्री ज्वालामुखी देवी

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट करे ।।
सुन जगदम्बा कर न विलम्बा, सन्तन का भण्डार भरे ।
सन्तन प्रतिपाली, सदा खुशहाली, सब जग का कल्याण करे ।।

बुद्धि विधाता, तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे ।।
जब-जब भीर पड़ी भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करे ।
सन्तन प्रतिपाली···

बार-बार तू सब जग मोहे, तरुणी रूप अनूप धरे ।
माता हो कर पुत्र खिलावे, भार्या हो कर भोग करे ।।
सन्तन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जय-जयकार करे ।
सन्तन प्रतिपाली···

ब्रह्मा विष्णु महेश सहस्रफन, भेंट के लिए तेरे द्वार खड़े ।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र फिरे ।।
जो कोई नाम लेई अम्बा का, पाप छिनक में भस्म करे ।
सन्तन प्रतिपाली···

वार शनिश्चर कुम-कुम वरणी, जब लंकण्ड़ पर हुक्म करे ।
खप्पर खड्ग त्रिशूल हाथ ले, रक्तबीज को भस्म करे ।।
शुम्भ निशुम्भ पछाड़े माता, महिषासुर को पकड़ दले ।
सन्तन प्रतिपाली···

ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिवशंकर हरि ध्यान करे ।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चंवर कुबेर डुलाय रहे ।।
जय जननी जय मातुभवानी, अटलभवन में राज्य करे ।
सन्तन प्रतिपाली···

देवताओं द्वारा माता की स्तुति करना

Photography : Commercial Photographers

Published by Pustak Sansar, 167, Exhibition Ground, JAMMU-180001 exhibition

Price Rs [illegible] only